



Original Article

21वीं सदी की हिंदी कविताओं में चित्रित किन्नर समस्याएँ

प्रो. डॉ. प्रवीणकुमार न. चौगुले

प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,

श्रीमती कस्तूरबाई वालचंद कॉलेज ऑफ आर्ट्स अँड सायन्स, सांगली

Manuscript ID:

IJAAR-C130367

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 346 - 351

Submitted: 06 Feb. 2026

Revised: 15 Feb. 2026

Accepted: 20 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

प्रो. डॉ. प्रवीणकुमार न. चौगुले

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22787161

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22787161>



Creative Commons



सार:

मुख्य धारा के समाज द्वारा हाशिए पर रखे, प्रताड़ित, पीड़ित एवं शोषित किन्नर समाज की समस्याएँ बेहद शोचनीय हैं। उनकी वर्तमान स्थिति को मद्दे नजर रखते हुए इंसानियत के नाते उनकी इस दयनीय एवं शोचनीय स्थिति से उन्हें उभारकर उनके जीवन-स्तर को सुधारना आवश्यक है। कानूनन प्रावधान, सजगता आदि की दृष्टि से पीछड़े इस समुदाय को इंसान की हैसियत से सम्मान-जनक जीवन जीने के लिए सचेत करना आज बेहद जरूरी हो गया है, जो नीतिसंगत है। इस दृष्टि से इस समुदाय की वास्तव स्थिति को प्रकाश में लाने एवं उसपर विचार-विमर्श करने की आवश्यकता बढ़ गई है। साहित्य इस दृष्टि से महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। 21वीं सदी के हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं के साथ ही हिंदी कविताओं में इनके जीवन से संबंधित अनेक समस्याओं, आयामों एवं पहलुओं को उजागर किया गया है, ताकि समाज के सामने इनकी दुःखभरी सच्चाई मुखर हो। इस समुदाय के प्रति मुख्य धारा के समाज के सकारात्मक नजरिए को विकसित करने तथा उनके प्रति के सामाजिक दायित्व को सचेत करने की दृष्टि से भी इन कविताओं में अभिव्यक्त विचारधारा द्वारा मदद मिलती है। अतः इस समुदाय के जीवन से संबंधित विभिन्न समस्याओं तथा आयामों को गहरी संवेदनशीलता के साथ इन कविताओं में उजागर किया गया है, जो निश्चय ही किन्नरों को हाशिए से हटाकर अपनेपन के साथ समाज की मुख्य धारा में शामिल करने की माँग करते हैं।

मुख्य शब्द: किन्नर समुदाय, हिंदी कविता, गहन समस्याएँ, दयनीयता, जागृति, इंसानियत, सकारात्मक समाज-दृष्टि।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

प्रो. डॉ. प्रवीणकुमार न. चौगुले. (2026). 21वीं सदी की हिंदी कविताओं में चित्रित किन्नर समस्याएँ. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 346 - 351. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22787161>

प्रस्तावना:

दलित, आदिवासी, घुमंतू, दिव्यांग, वृद्ध, अल्पसंख्यक, बालमजदूर आदि की तरह ही बरसों से समाज में बहिष्कृत, समाज के व्यंग्य, घृणा, तिरस्कार आदि को सहने के

लिए अभिशप्त, हाशिए पर रखे किन्नरों पर स्वतंत्र विचार-विमर्श करने की आवश्यकता है। बरसों से प्रताड़ित किन्नरों की सामाजिक स्थिति बहुत ही भयावह है। स्त्री और पुरुष की तरह ही एक मनुष्य के रूप में ही समाज द्वारा उसे अपनाया नहीं गया



और इस विडम्बना को सहते रहना उसकी महज महबूरी मात्र बनकर रह गई है। वह भी समाज का ही एक अविभाज्य अंग है, इस दृष्टि से कभी गइराई से सोचा ही नहीं गया। हमारे समाज में पुरुष और स्त्री इन दो लिंगों के अलावा भी एक अन्य प्रजाति का अस्तित्व मौजूद है, जो न पुरुष है न स्त्री। वह न संबंध बना सकता है और न ही गर्भ धारण कर सकता है। प्रायः किन्नर या हिजड़ों से अभिप्राय उन लोगों से है, जिनके जननांग पूरी तरह विकसित न हो पाए हों अथवा पुरुष होकर भी स्त्रीय स्वभाव के लोग, जिन्हें पुरुषों की जगह स्त्रियों के बीच रहने में सहजता महसूस होती है। पारंपारिक अनुष्ठानों में आशीर्वाद देने पहुँचने वाले किन्नर समुदाय के जीवन एवं जेहन में झाँका जाए तो बेहद कटु यथार्थ के दर्शन होते हैं, जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। असल में बहुत ही भयावह जीवन जीने के लिए ये विवश होते हैं। जन्म से विरासत में मिली इस व्यंग्य शारीरिक स्थिति के बोज को शाप की तरह अपने नसीब के साथ चिपकाकर वे ताउम्र जीते जी मरते रहते हैं। उम्रभर तिरस्कार, घृणा, तानों एवं अपमान को सहते-सहते अपने ही लिंग से नफरत करते-करते जीना कितना तकलिफदेह होगा इसका अनुमान भी हम नहीं लगा सकते। सच्चाई यह है कि अन्य इंसानों की तरह ही समाज का एक हिस्सा होने पर भी पशुओं से भी बदतर और गयागुजरा जीवन जीने के लिए समाज द्वारा ही इन्हें मजबूर किया जाता है, जो निश्चिन्त ही इंसानियत के लिए शर्मनाक बात है। इन्हें हिजड़ा, थर्ड जेंडर, ख्वाजासरा, किन्नर, खोजा, नपुसक, उभयलिंगी, शिखंडी आदि नामों से पुकारा जाता है। ज्यादातर लोग इनसे दूर रहना पसंद करते हैं, कुछ तो घृणावश इनका मुँह भी देखना पसंद नहीं करते, कुछ को इनसे भय लगता है, कईयों के लिए ये केवल मजाक एवं मनोरंजन भर की सामग्री बनते हैं, तो कईयों के लिए इनका जन्म ही बेकार है।

बहुत ही कम लोग होंगे जो इनके प्रति संवेदनशीलता रखते होंगे।

अज्ञान, बेरोजगारी, दयनीय आर्थिक स्थिति, सत्ता के लिए उत्तराधिकारी की परंपरा, शिक्षा का अभाव आदि समस्याओं से ग्रस्त ये किन्नर अपने भेदे पहनावे एवं अंदाज में वसूली, वेश्या-व्यवसाय, भीक माँगने जैसे कार्यों को अंजाम देने के लिए मजबूर हो जाते हैं और फिर यही जिंदगी जीने की आदत के वे शिकार हो जाते हैं। भारत की सन 2011 की जनगणना के अनुसार पूरे भारत में लगभग 4.9 लाख किन्नर हैं, जिनमें से 1 लाख 37 हजार उत्तर प्रदेश में हैं। इनमें आधे से अधिक नकली स्वांग करने वाले हिजड़े हैं।¹ समाज में व्याप्त इन किन्नरों की समस्याएँ, उनकी दयनीय स्थिति तथा उनके जीने के अधिकार को संवेदनशील सहृदय तथा इंसानियत की दृष्टि से समझना तथा उसपर गंभीरता से विचार-विमर्श होना जरूरी है। इस दृष्टि से स्त्री एवं पुरुष की भाँति ही उन्हें सामाजिक समानता का अधिकार दिलाने में साहित्य की भूमिका अनन्यसाधारण है, अतः इस प्रकार के साहित्य पर गहन चिंतन अपेक्षित है।

आज की घड़ी में किन्नर भी घृणा, दमन और तिरस्कार की दास्तान को ठुकराते हुए अपने अधिकारों के प्रति सजग हो रहे हैं। किन्नर लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी के संघर्ष के कारण 15 अप्रैल, 2014 में उच्चतम न्यायालय ने किन्नरों को तीसरे लिंग अर्थात् थर्ड जेंडर की मान्यता भी प्रदान की। इतना ही नहीं उच्चतम न्यायालय ने इन्हें बच्चा गोद लेने का अधिकार भी दिया और इन्हें चिकित्सा के माध्यम से पुरुष या स्त्री बनने का भी अधिकार दिया। भारतीय नागरिक होने के नाते इन्हें गरिमापूर्ण जीवन जीने का अधिकार है यह बात हमारा सर्वोच्च न्यायालय बखूबी जानता है, जिस कारण इन्हें ओ.बी.सी., अनुसूचित दायरे में रखते हुए आरक्षण दिया है, जो इनकी स्थिति में बदलाव लाने की ओर एक सकारात्मक कदम



है। संसद में पेश हुए विधेयक के जरिए किन्नरों को भेदभाव से बचाने और उनके अधिकारों के संरक्षण के लिए केंद्रीय कैबिनेट ने 'ट्रांसजेंडर पर्सन' बिल 2016 को मंजूरी दे दी।² इस विधेयक के जरिए सरकार किन्नरों के सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक सशक्तीकरण के लिए तंत्र विकसित करेगी। अपने अधिकारों के प्रति सजग होते हुए अब कई किन्नरों ने अपने आधार कार्ड एवं वोटर आय. डी. बनवाने शुरू कर दिए हैं। शिक्षा, राजनीति, फैशन जगत आदि क्षेत्रों में वे अपने कदम बढ़ा रहे हैं। अपनी स्थिति से ऊपर उठकर सक्षमता की ओर ऊँची उड़ान भरने के लिए इनके प्रशंसनीय प्रयास निरंतर जारी हैं।

साहित्य में किन्नरों को लेकर पहले भी लिखा जा चुका है। 'महाभारत' महाकाव्य में शिखण्डी का उल्लेख है तथा अर्जुन ने अज्ञातवास में एक साल किन्नर रूप में बिताया था। कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में किन्नरों का उल्लेख किया है। समय-समय पर कहानी, नाटक, उपन्यासों में भी गौण पात्रों के रूप में इनका उल्लेख मिलता है। किन्नरों पर साहित्य में अल्प मात्रा में लिखा गया है और इतिहास में किन्नरों ने भी कई पदों को संभाला है। किंतु इंसानियत के नाते आज उनकी शोचनीय स्थिति पर गहराई से चिंतन करना अपेक्षित है और इस दृष्टि से कई साहित्यकार, समीक्षक एवं विद्वान प्रयासरत हैं। आज कई साहित्यकार किन्नरों को लेकर गंभीरता से लिख रहे हैं। साहित्य ने उपेक्षित समुदाय के रूप में उसकी व्यथा-कथा को सदियों से समाज-सम्मुख रखने का प्रयास किया है, ताकि समाज सहानुभूति एवं संवेदना के पक्ष को लेकर इन्हें भी अपनाते हुए अपने में समा ले। साहित्य ने हमेशा से ही समाज की कुरीतियों तथा विसंगतियों पर प्रहार करते हुए समाज की आँखें खोलने का प्रयास किया है। हिंदी कथा एवं कथेतर-साहित्य की विभिन्न विधाओं जैसे उपन्यास, कहानी, नाटक एवं आत्मकथा

आदि में किन्नर विमर्श के विभिन्न आयामों को उजागर किया गया है।

हिंदी साहित्य जगत में किन्नरों को केंद्र में रखकर अभी तक साहित्य बहुत ही कम मात्रा में लिखा गया है, निश्चय ही कुछ साहित्यकार इस दृष्टि से लगातार प्रयासरत हैं। हिंदी कविता के क्षेत्र में तो इस विषय को केंद्रीत कर लिखी कविताओं की संख्या बहुत ही अल्प है। लेकिन इस दृष्टि से कवियों के कदम निश्चय ही बढ़ रहे हैं। इन कवियों में पूजा बंसल, संगीता सिंह 'भावना', डॉ. लता अग्रवाल, संगम वर्मा, दीप्ति कुशवाह, अंजना वर्मा, धर्मवीर सिंह, सपना मांगलिक, पारू मदननाईक, नीलम शर्मा, अखिल जैन, देवराज सन्जु आदि के नाम लिए जा सकते हैं। आज नए सिरे से कई कवि इस विषय पर अपनी लेखनी चला रहे हैं। इनमें से ज्यादातर कवियों ने इस उपेक्षित और हाशियाकृत किन्नर समुदाय की गहरी संवेदनाओं को, उनकी आर्थिक सामाजिक स्थिति को, उनकी दयनीयता, समस्याएँ, पीड़ा, आक्रोश, संघर्ष, जिजीविषा, सवाल आदि को पाठक के समक्ष प्रस्तुत किया है और सोचने के लिए बाध्य किया है। इन कविताओं में अन्याय, दमन, घृणा की दास्तान के साथ उनका दुःख फूट-फूटकर रो उठता है और पाठक के दिलो-दिमाख को झकझोरता है। अमन प्रकाशन, कानपुर, उ. प्र. द्वारा सन 2019 में प्रकाशित, डॉ. विजयेंद्र प्रताप सिंह द्वारा संपादित थर्ड जेंडर पर केंद्रित कविता-संग्रह 'अस्तित्व और पहचान' में किन्नर समुदाय की गहरी संवेदनाओं को, उनकी आर्थिक सामाजिक स्थिति को, उनकी समस्याएँ, पीड़ा, आक्रोश, संघर्ष आदि को पाठक के समक्ष प्रस्तुत किया है। 'हिजड़े' कविता में इस वर्ग की सच्चाई को बयान करते हुए कृष्ण मोहन झा लिखते हैं -

उनकी गालियों और तालियों से भी उड़ते हैं खून की छींटें

और यह जो गाते-बजाते ऊधम मचाते



हर चौक-चौराहे पर
वे उठा लेते हैं अपने कपड़ें ऊपर
दरअसल वह उनकी अभद्रता नहीं
उस ईश्वर से प्रतिशोध लेने का उनका एक तरीका है
जिसने उन्हें बनाया है
या फिर नहीं बनाया।³

ताउम्र अपने ही तन से, अपने ही लिंग से घृणा करते
हुए तिरस्कृत झूठे वेश को परिधान कर नितदिन गालियों को
सहते हुए सम्मानहीन जीने के लिए वह मजबूर है और उसके
इस असीम दर्द को कोई समझनेवाला भी नहीं है। अपने
अस्तित्व को ही प्रश्नचिह्न लगाते हुए वह खुद से ही पूछ रहा है
कि इस दुनिया में उसे इंसान का दर्जा ही नहीं तो यह झूठा स्वांग
क्यों रचाना? कोई भी किन्नरों के दर्द को सुनना, समझना व
महसूस करना नहीं चाहता -

कहते विकलांग उसे, जिनका अंग भंग हो जाता
मिलता यह दर्जा मुझको तो, क्यों मैं स्वांग रचाता।
झूठा वेश, खोखली ताली, दो कोठी बस खाली
जीता आया नितदिन जो मैं, जीवन है वो गाली।
घिन करता इस तन से हरपल, मन से भी लड़ता हूँ
कोई नहीं जो कहे तेरा मैं दर्द समझता हूँ।⁴

किन्नरों के स्वाभाविक यौन व्यवहार को समाज द्वारा
अपराध के नजरिए से देखा जाता है और फिर वे खुद की नजरों
से ही गिराए जाते हैं। फिर खुद के प्रति की नफरत को लेकर ही
वे पूरी जिंदगी बसर करने के लिए विवश हो जाते हैं। परिवार के
सदस्य उन्हें पास रखना नहीं चाहते और अगर चाहते भी हैं तो
भी समाज उसमें रूकावट बनता है। अंधा, बहरा, मनोरोगी या
अन्य कोई व्यंग्य व्यक्ति परिवार में सहज रह सकता है, बस नहीं
रह सकते तो सिर्फ किन्नर। इस विवशता के बारे में अपनी माँ के
प्रति की एक किन्नर की पुकार देखिए -

लज्जा का विषय क्यों हूँ अम्मा मेरी
अंधा, बहरा या मनोरोगी तो नहीं था मैं।
सारे स्वीकार हैं परिवार समाज में सहज,
मैं ही बस ममतामय गोद से बिछड़ा हूँ।⁵
जिन किन्नरों का बचपन माँ-बाप और परिवार के साथ
बहुत ही लाड़-प्यार से गुजरा है, वह धुँधलासा बचपन एक
सपने की तरह पूरी उम्र उन्हें याद आता रहता है। मैं ही क्यों?
इसके लिए कौन जिम्मेदार है? इस प्रकार के प्रश्न वह माँ से
पूछता है। बीत रहे बोझ भरे जीवन की दयनीय दासता को वह
माँ को सुनाता है। माँ की याद उसे बहुत सताती है। लेकिन
उसके घावों पर मरहम लगाने वाला कोई नहीं है -

क्यों जीवन लगा मेरा ही दाव पर
हर रोज रिझते हैं जख्म मेरे, पर रखता नहीं मरहम कोई घाव पर
कौन है जिम्मेदार! माता-पिता या समाज?⁶

समाज में बेटा कुल का दीपक होता है और बेटी
अनमोल, पर किन्नर के जन्म से घर में मातम छा जाता है। पिता
मातम मनाते हैं, माँ कोख को कोसती है और उस किन्नर को
घर में छुपाके रखा जाता है। बाद में माँ-बाप उसे किन्नर समुदाय
के हवाले कर देते हैं और असल में वह लावारिस होकर जीने में
मजबूर हो जाता है। अब वहाँ गुरिया के भरोसे ही जिंदगी तन्हा
काटनी पड़ती है। ताली पीटकर, घुंगरू छनकाकर, नाच-नाच
कमर लचकाकर दिनभर की कमाई गुरिया के चरणों में चढ़ाने
के बावजूद भी किन्नर अपूर्ण ही कहलाते हैं। देवराज सन्जु ने
उनके दिल की दर्दभरी दास्तान को इस प्रकार सामने रखा है -

ताली पीटूँ, घुंगरू छनकाऊँ
नाच-नाचकर, कमर लचकाऊँ
दिनभर इकट्ठे किए जो सिक्के
गुरिया के चरणों में जाकर चढ़ाऊँ
गुरिया है संपूर्ण इंसान



मैं कमाने वाली अपूर्ण ही कहलाऊँ

क्योंकि

मैं एक किन्नर जो हूँ।⁷

इनके श्रापित जीवन की मन को तिलमिला देने वाली और एक भयंकर बात याने इनके जीवन का अंत। मृत्यु के उपरांत भी घृणा और तिरस्कार इनका पिछा नहीं छोड़ते। अगले जन्म में फिर किन्नर का जन्म ना मिले इसलिए उसकी लाश को जूतों और चप्पलों से मारा जाता है, इससे दुःखद और लज्जास्पद इंसानी जीवन में और क्या हो सकती है -

जितना श्रापित मेरा जीवन, दुःखद अधिक मर जाना,

जूते चप्पल मार लाश को, कहते लौट न आना।⁸

समाज में किन्नरों की बददुआ से सब डरते हैं। जनमानस में यह रूढ़ है। पर असल में समाज से अपनापन और वजूद तलाशते इन किन्नरों का जीवन ही बिल्कुल बददुआ जैसा है। इनकी दयनीयता पर दया करते हुए इंसान होने के नाते इन्हें ठुकराने की अपेक्षा इन्हें इंसान की हैसियत से स्वीकार कर इनके प्रति सकारात्मक नजरिए को अपनाया जाना चाहिए -

वजूद की तलाश में

अपनेपन की आस में

भटकता गली गली

अपने ही अंदाज में

डरते लोग इसकी बददुआ से

लेकिन उसका खुद का

जीवन ही है एक बददुआ

न इनको ठुकराओ,

गले से लगाओ

न दिल इनका दुखाओ⁹

किसी आम भ्रूण की तरह ही किन्नर भी नौ माह माँ के गर्भ में पलता है। उसके आने की खबर पर खुशी मनाई जाती है।

माँ दिल में कितने अरमान लेकर आने वाले महमान के लिए छोटे-छोटे मोजे, टोपी और स्वेटर बुनती है, उसके लिए सुंदर सा नाम चुनती है। लेकिन उसके दर्मयाना पैदा होने पर अचानक मातम छा जाता है। फिर यह ऐसा क्यों हुआ? क्या यह इंसानी भूल का ही नतीजा नहीं है। औषधियों का दुष्प्रभाव हो या आहार दोष, इसके लिए फिर कौन दोषी है? और इसकी सजा वह अबोध क्यों पाए। फिर यह अभिशप्त जीवन वह ही क्योंकर सहे? इसलिए समाज से अब वह अपने हक और अधिकारों की माँग कर रहा है। वह सदियों से सिर्फ इंसान का दर्जा, अपना अधिकार माँग रहा है, लेकिन दुर्भाग्य है कि इंसानों की दुनिया वह उसे नहीं दे रही है। सपना मांगलिक ने उसके दर्द को बखूबी प्रस्तुत किया है -

मेरे हक, खुशियाँ, सब सपने, माँग रहा हूँ कबसे

छीन लिया इंसान का दर्जा, दुआ माँगते मुझसे।¹⁰

उसकी समाजसम्मुख दयनीय दरखास्त है कि वे भी उनके बारे में इंसानियत के नाते थोड़ा-सा सोचे। औरों की तरह शिक्षा और रोजगार के अवसरों से वे ही क्यों वंचित हैं, औरों की तरह ही प्यार और सम्मान के साथ वे इसी समाज का हिस्सा क्यों नहीं बन सकते हैं।

फिर क्यों रहे सभी अधिकारों से वंचित

सोचना जरा हमारे बारे में

क्यों नहीं मिले शिक्षा और रोजगार का अवसर

क्यों नहीं इसी समाज का हिस्सा बने प्यार और सम्मान के

साथ...¹¹

निष्कर्ष:

निष्कर्षतः साहित्य में अन्य हाशिए पर रखे हुए समाज की तरह किन्नर समाज को गंभीरता से लेते हुए उससे संबंधित विभिन्न समस्याओं एवं आयामों पर गौर करना जरूरी है।



समाज द्वारा उपेक्षित इस समुदाय की समस्याएँ, पीड़ा, उनके दुःख-दर्द, दयनीय स्थिति समाज-सम्मुख लाने हेतु एवं उनके सुधार व अधिकारों की जागृति हेतु साहित्य की भूमिका अनन्यसाधारण है। थर्ड जेंडर के रूप में उन्हें कानूनी अधिकार तो प्राप्त हो गया, लेकिन खुद उनकी इसके प्रति की सजगता एवं समाज के इनके तरफ देखने के नजरिए में बदलाव लाने हेतु और भी प्रयास होने आवश्यक हैं। तिनका-तिनका तड़पने के लिए विवश दलदल में फँसे इन किन्नरों की स्थिति को कई साहित्यकारों ने अभिव्यक्त किया है। इस दृष्टि से इनको केंद्रीत कर उपन्यास, कहानियाँ, नाटक, आत्मकथाएँ लिखी गई हैं और लिखी जा रही हैं। कविता के स्तर पर यह मात्रा बहुत ही अल्प है, लेकिन इस दृष्टि से आज कई कवि लिखने की कगार पर हैं। लेकिन फिर भी कुछ कविताओं में इनकी मन को तिलमिला देने वाली हृदयद्रावक स्थिति, पीड़ा, दर्द, विवशता, समस्या, अधिकारों के प्रति जागृति आदि की तीव्र अभिव्यक्ति हुई है। उनके अस्तित्व का गंभीर प्रश्न, उनकी लाचारी, दयनीयता, समाज का उनकी तरफ देखने का गलत नजरिया, ताउम्र घृणा एवं तिरस्कार सहते रहने की मजबूरी, दोषी न होने पर भी असहाय सजा को भुगतने की विवशता, समाज द्वारा थोड़े से अपनेपन की आकांक्षा और इंसान का दर्जा देने की अभिलाषा, पशुओं जैसे अत्याचार से मुक्तता, जीवन की घोर निराशा, मृत्यु के उपरांत भी घृणा एवं तिरस्कार, समाज द्वारा उन्हें अपनाने की गुहार, अपना हक, दर्जा, अधिकार, प्यार एवं सम्मान आदि की माँग जैसे विभिन्न आयामों को गहरी संवेदनशीलता के साथ इन कविताओं में उजागर किया गया है, जो निश्चय ही किन्नरों को हाशिए से हटाकर अपनेपन के साथ समाज की मुख्य धारा में शामिल करने की माँग करते हैं।

संदर्भ:

1. किन्नर विमर्श: समाज के परित्यक्त वर्ग की व्यथा कथा - डॉ. पुनीत बिसारिया, 31 मई 2016, drpuneetbisaria.blogspot.com>2016/05
2. sathsath...संविधान की नजर में इंसान हैं किन्नर.htm
3. शिक्षा, साहित्य व हिंदी सिनेमा में किन्नर विमर्श - सं. अमित कुमार दुबे, प्र. सं. 2020, पृ. 60
4. हिजड़े की व्यथा- सपना मांगलिक, hindi.webdunia.com
5. नीरजा माधव के 'यमदीप' में खुला किन्नरों के जीवित यथार्थ का तिलतिल मरता राज - किरण ग्रोवर, सेतु - द्वैभाषिक पत्रिका - मार्च, 2017 www.setumag.com>2017/03
6. किन्नर...माँ के नाम एक पाती, जो लिखी है रह जाती - नीलम शर्मा, sahityapedia.com
7. मैं एक किन्नर हूँ - देवराज सन्जु, <https://m.facebook.com>
8. हिजड़े की व्यथा - सपना मांगलिक, hindi.webdunia.com
9. किन्नर - अंजु मोटवानी, <https://storymirror.com>>poems>hindi
10. हिजड़े की व्यथा - सपना मांगलिक, hindi.webdunia.com
11. थर्ड जेंडर - पूनम सिन्हा, काव्यकोश, www.kavyakosh.com, 18 Aug., 2016